वट सावित्री व्रत कथात्री व्रत कथा

वट सावित्री व्रत कथात्री व्रत कथा
एक समय की बात है, भद्र देश में अश्वपति नाम का एक बुद्धिमान नाम का एक बुद्धिमान
और ज्ञानी राजा राज करता था। अपने दुःख को कम करने केलिएःख को कम करने केलिए,
उन्होंने और उनकी पत्नी ने कठोर व्रत रखा और सावित्री देवी की पूजा त्री देवी की पूजा
की और उनसे बेटी पैदा होने का आशीर्वाद मांगा। उनकी भक्ति का
का
फल मिला और उन्हें सावित्री नाम की एक बेटी का आशीर्वाद मिलाा, जो
सभी गुणों से सुशोभित थी।
त थी।
समय बीतता गया, धीरे ीरे - धीरे उनकी बेटी सावित्री बड़ी होती गयीत्री बड़ी होती गयी,
सावित्री बहुत सुन्दर थीत्री बहुत सुन्दर थी, सावित्री जब विवाह केलिए उपयुक्त उम्र में त उम्र में
पहुंचींची, तो उसकेपिता
ता, राजा अश्वपति को अपनी बेटी सावित्री केलिए
त्री केलिए
कोई योग्य वॉर नहीं मिल रहा था
रहा था, जिस जिस कारन से उन्होंने सावित्री
त्री
को अपना वर चुनने की स्वतंत्रता दे दी। इसकेबाद सावित्री स्वयं अपने ं
अपने
लिए वर ढूंढ़ने अपने राज्य से बाहरंढ़ने अपने राज्य से बाहर चली गयी. ी गयी. कुछ समय बाद सावित्री त्री
अपने चुने हुए वर केसाथ वापस राजमहल लौट आयी.
ौट आयी.
एक दिनन, ऋषि महर्षिनारद राजा अश्वपति केमहल में आए और नारद में आए और नारद
केप्रति अत्यंत भक्तिभाव केसाथ सावित्री अपने चुने हुए वर केसाथ
त्री अपने चुने हुए वर केसाथ
महर्षिनारद केपास आयी. नारद केपूछने पर नारद केपास आयी. नारद केपूछने पर, सावित्री ने बतायात्री ने बताया, "मैंने
सत्यवान को अपने पति केरूप में चुना है केरूप में चुना है, जो राजा घुमत्सेन का
आज्ञाकारी पुत्र है। उसका राज्य छीन लिए जाने केबावजूद, वह अब
अपनी पत्नी केसाथ जंगल में एक अंधे पथिक केरूप में रहता है।"
क केरूप में रहता है।"
नारद ने सत्यवान और सावित्री की ग्रहों की स्थिति की सावधानीपूर्वक
क
जांच करने और उनकेअतीतंच करने और उनकेअतीत, वर्तमान और भविष्य पर विचार करने केचार करने के
बाद, राजा को बताया, "राजा, आपकी बेटी ने वास्तव में एक अद्भुत वर
चुना है। सत्यवान गुणी और धर्मनिष्ठ है
ष्ठ है, जो सावित्री केलिए उपयुक्त
त

है।" हर मामले में।"हालाँकि
, उन्होंने आगाह किया कि सत्यवान में एक

सत्यवान में एक
महत्वपूर्ण दोष था
था - एक छोटा जीवनकाल, जो एक वर्ष केभीतर समाप्त केभीतर समाप्त
होने वाला थाा था, ठीक उसी समय जब सावित्री बारह वर्ष की हो जाएगी।
की हो जाएगी।
नारद की यह भविष्यवाणी सुनकर राजा को बहुत चिंता होने लगी
गी,
उन्होंने अपनी पुत्री सावित्री को बुलाकर कहा की हे पुत्री तुम सत्यवान
ाकर कहा की हे पुत्री तुम सत्यवान
केअतिरिक्त कोई अन्य योग्य वर ढूंढ लो
ो, जिसकेउत्तर में सावित्री ने त्री ने
कहा की "पिताजी! हमारी परंपरा आर्य परंपरा हैंपरा है, और आप तो जानते ही
है की इस कुल केलड़कियां जीवन में केवल एक बार ही अपना जीवन
एक बार ही अपना जीवन
साथी चुनती हैं। मैंने जो अपना पति चुना है वो पुरे दिल से चुना है
से चुना है,
और मैंने इन्हे स्वीकार कर लिया है कि अब चाहे जो भी हो मुझे इन्ही अब चाहे जो भी हो मुझे इन्ही
केसाथ रहना है, मैं इनकेअतिरिक्त किसी दूसरे केबारे में सोच भी
सी दूसरे केबारे में सोच भी
नहीं सकती।ंसकती।
सावित्री ने आगे कहात्री ने आगे कहा, "पिताजीताजी, जिस प्रकार राजा सोच समझकर केवल
एक बार अपना आदेश देता है, पंडित भी केवल एक बार अनुष्ठान करता
एक बार अनुष्ठान करता
हैं, और कन्यादान (शादी में बेटी को देना) का कार्य केवल एक बार
एक बार
किया जाता है। चाहे जो भी हो आगे क्या होगाया होगा, सत्यवान ही मेरा पति
रहेगा।”
सावित्री केदृढ़ वचन सुनकर राजा अश्वपति ने सत्यवान केसाथ उसके
ने सत्यवान केसाथ उसके
विवाह की सहमति दे दी। जैसा कि नारद जी ने बताया था नारद जी ने बताया था, सावित्री को त्री को
अपने पति की मृत्यु केसमय की जानकारी थी। उन्होंने जंगल में अपने
में अपने
पति और सास और सास-ससुर की सेवा करते हुए अपना जीवन शुरू किया। जैसेया। जैसे-
जैसे समय बीतता गया, सावित्री बारह वर्ष की हो गई और नारद जी की की हो गई और नारद जी की
बातें उसकेमन पर भारी पड़ती रहीं। जब उसकेपति केअनुमानित
त
अंत में केवल तीन दिन शेष रह गए रह गए, तो उसने उपवास शुरू किया और या और

नारद जी द्वारा बताई गई नियत तिथि पर अपने पूर्वजों केसम्मान
जों केसम्मान
में अनुष्ठान किया।या।
एक दिन जब सत्यवान लकड़ी इकट्ठा करने केलिए जंगल में गया।
में गया।

अपने सास-ससुर से अनुमति मांगकर सावित्री भी उनकेसाथ चली गई।
ी गई।
जंगल में सत्यवान ने सावित्री केलिए मीठे फल इकट्ठे किये और फिर
र
लकड़ी काटने केलिए एक पेड़ पर चढ़ गये। हालाँकि, जैसे ही वह पेड़
पर चढ़ाा, उसकेसिर में असहनीय दर्द हुआ और उसे नीचे उतरना पड़ा।
ा।
सावित्री ने सावधानी से उसका सिर अपनी गोद में रखकर उसे पास के
र अपनी गोद में रखकर उसे पास के
एक बरगद केपेड़ केनीचे लिटा दिया। चिंता से कांपते हुए उसने
ांपते हुए उसने
दक्षिण दिशा से यमराज को आते देखा।शा से यमराज को आते देखा।
जब यमराज और उनकेदूत सत्यवान केप्राण लेने आये तो सावित्री ने
त्री ने
उनका लगातार पीछा किया। यमराज ने सावित्री को समझाने का प्रयास
त्री को समझाने का प्रयास
किया और उसे वापस जाने केलिए कहाया और उसे वापस जाने केलिए कहा, लेकिन उसने जवाब दियाया, "हे
यमराज! एक पत्नी का कर्तव्य अपने पति की रक्षा करना उसका पहला
ा
धर्म है। मेरे पतिव्रत की शक्ति से कोई भी मुझे उनकेपीछे जाने से से कोई भी मुझे उनकेपीछे जाने से
रोक नहीं सकते हैं सकते है, इसका विरोध करना आपकेलिए उचित नहीं है।"ं
है।"
सावित्री केधर्मयुक्त वचनों से प्रभावित होकर यमराज ने उसकेपति
केप्राणों केअलावा कोई भी अन्य वर मांगने कहा
ांगने कहा, जिसकेउत्तर में सकेउत्तर में
सावित्री ने अपने सास त्री ने अपने सास - ससुर की आंखों की रोशनी वापस दिलाने की
ाने की
केसाथ, उनकी लंबी उम्र की मांग की. यमराज ने
ांग की. यमराज ने 'तथास्तु' कहकर
उसकी इच्छा पूरी की। फिर भी
र भी, सावित्री पीछे नहीं हटी और यमराज कें
हटी और यमराज के
साथ चलती रही। एक बार फिर
र, यमराज ने उसे वापस लौटने केलिए ौटने केलिए
कहा, लेकिन सावित्री ने कहात्री ने कहा, "हे धर्मराज! मुझे अपने पति का अनुसरण
का अनुसरण
करने में कोई आपत्ति नहीं है। एक महिला केजीवन का उसकेपति के
के

बिना कोई अर्थ नहीं है। एक पति और पत्नी अलगग-अलग रास्ते पर ग रास्ते पर
कैसे चल सकते हैं सकते हैं? यह मेरा कर्तव्य है की मैं मेरे पति का अनुसरण
का अनुसरण

करू।"
सावित्री की अपने पति केप्रति अटूट भक्ति से प्रभावित होकर यमराज
त होकर यमराज
ने उससे एक बार फिर उसे अपने पति से संबंधित वरदान मांगने को
ांगने को
कहा। उत्तर में सावित्री ने यमराज से अपने ससुराल वालों का खोया
ोंका खोया
हुआ राज्य वापस दिलाने और सौ भाई होने का वरदान मांगा। एक बार
ांगा। एक बार
फिरर, यमराज ने "तथास्तु" कहकर उसकी इच्छाएँ पूरी कर दीं। फिर भी
र भी,
सावित्री यमराज का पीछा करने में लगी रही। यमराज उसे वापस जाने
गी रही। यमराज उसे वापस जाने
केलिए कहता रहा।
हालाँकि
, सावित्री अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रही। तब यमराज ने कहा रही। तब यमराज ने कहा, "हे
देवी! यदि आपकेमन में अब भी कोई इच्छा हो तो कृपया कह दें। आपकेमन में अब भी कोई इच्छा हो तो कृपया कह दें।
आप जो भी मांगेंगींगेंगी, मैं प्रदान करूंगा।" जवाब में सावित्री ने कहा
त्री ने कहा, 'यदि
आप सचमुच मुझ पर प्रसन्न हैं और सच्चे मन से यह वरदान देते हैं
तो मुझे सौ पुत्रों की मां बनने का वरदान दीजिए।
ए।' यमराज ने 'तथास्तु'
कहकर उसकी यह इच्छा भी पूरी कर दी। पीछे मुड़कर उन्होंने सावित्री
त्री
से प्रश्न कियाया, "तुम मेरा पीछा क्यों करती रहती होयों करती रहती हो? मैंने तुम्हें वांछित
त
वरदान दे दिया है।" या है।"
सावित्री ने उत्तर दिया
या, "धर्मराज! आपने मुझे सौ पुत्रों की माँ बनने का ांँ बनने का
आशीर्वाद दिया है
या है, तो क्या मैं बिना पति केबच्चे को जन्म दे सकती
केबच्चे को जन्म दे सकती
हूँँ? मुझे अपना पति वापस पाना होगा वापस पाना होगा; तभी मैं आपका वरदान पूरा कर
सकती हूँ।" सावित्री की अटूट भक्ति
, धर्मपरायणता और ज्ञान से प्रभावित त
होकर यमराज ने सत्यवान की आत्मा को मुक्त कर दिया।
या।

यमराज केवरदान से, सावित्री का रास्ता उसे वापस उसी बरगद केपेड़
तक ले गया जहाँ सत्यवान का निर्जीव शरीर पड़ा था। उसे प्रणाम करने ा था। उसे प्रणाम करने
और पेड़ की परिक्रमा पूरी करने पर
क्रमा पूरी करने पर, सत्यवान चमत्कारिक रूप से जीवित
त

हो गया। खुशी-खुशी वे एक साथ घर लौटे। सावित्री
त्री, अब अपने पति
और अपने ससुराल वालों केआँखों की रोशनी केसाथँ
खों की रोशनी केसाथ, फिर से मिल
गई थी, और राजा घुमत्सेन ने अपना सिंहासन पुनः प्राप्त कर लिया ः
प्राप्त कर लिया
था। इसकेअलावाावा, यमराज केआशीर्वाद से राजा अश्वसेन सौ पुत्रों के
ाद से राजा अश्वसेन सौ पुत्रों के
पिता बने और सावित्री सौ भाइयों की बहन बनीं।ं
सावित्री ने दृढ़तापूर्वक अपने पतिव्रत का पालन करकेअपने पति के के
परिवार और अपने पूर्वजों दोनों को समृद्धि प्रदान की। सत्यवान और जों दोनों को समृद्धि प्रदान की। सत्यवान और
सावित्री लंबे समय तक राजसी सुख का आनंद लेते रहे और वैवाहिक
क
निष्ठा केसिद्धांतों केप्रति सावित्री की अटूट प्रतिबद्धता की कहानी ता की कहानी
दूर-दूर तक गूंजती रही।ंजती रही।